Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to transfer one Buddha 'Asthi Kalash' on display in National Museum, Delhi to National Museum, Piparhawa in Siddharthnagar district, Uttar Pradesh- laid

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): बौद्ध धर्म को मानने वाले लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष भगवान गौतम बुद्ध की जन्मस्थली कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर आने में अपना सौभाग्य मानते हैं । कपिलवस्तु आने वाले पर्यटक वहाँ के इतिहास को जानने की जिज्ञासा रखते हैं । इसी क्रम में भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने एक राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना पिपरहवा कपिलवस्तु में कही है, उसके अंतर्गत कपिलवस्तु में Department of Archaeology एवं कोलकाता विश्वविद्यालय की समस्त खुदाई से प्राप्त वस्तुओं को उक्त संग्रहालय में रखा गया है । लेकिन यहाँ से खुदाई से प्राप्त दो अस्थिकलश वर्तमान समय में राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली में रखे हुए हैं, जबकि गौतम बुद्ध ने जीवन के प्रारम्भिक 29 वर्ष कपिलवस्तु में ही व्यतीत किये थे । इसलिए बौद्ध श्रद्धालुओं के लिए कपिलवस्तु अत्यंत महत्वपूर्ण है । यदि एक अस्थिकलश वहाँ से राष्ट्रीय संग्रहालय पिपरहवा, कपिलवस्तु में स्थानान्तरित कर दिया जाये तो बौद्ध धर्म को मानने वाले लाखों पर्यटक प्रतिवर्ष सारनाथ, कपिलवस्तु, कुशीनगर एवं श्रावास्ती के साथसाथ अस्थिकलश के भी दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे जिससे देश एवं प्रदेश को काफी विदेशी मुद्रा से राजस्व में वृद्धि होगी एवं ध्यान लगाना बुद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण पहलू है । इसलिए बौद्ध श्रद्धालुओं के लिए संग्रहालय के पास एक ध्यान केन्द्र होना भी आवश्यक है ।

अत: मैं सरकार से मांग करता हूँ कि भगवान बुद्ध का एक अस्थिकलश राष्ट्रीय संग्रहालय कपिलवस्तु में उपलब्ध कराने हेतु भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग को निर्देशित करे ओर बौद्ध श्रद्धालुओं के लिए एक ध्यान केन्द्र की स्थापना करवाने की कृपा करे ।